

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687 E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com
सारांश खुत्ब: जुम्हः सेय्यदना खलीफतुल मसीहिल खामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अजीज दिनांक 29.01.16 मस्जिद बैतुल फतूह लंदन।

जमाअत में इस प्रकार के लोगों की संख्या अधिक होनी चाहिए कि जिनमें संवेदन शक्ति ऐसी हो जो आध्यात्मिक प्रभाव को अधिक से अधिक ग्रहण करने वाली हो तथा फिर दुनिया को बताने वाली हो कि वास्तविक नमाज़ क्या चीज़ है, वास्तविक इबादत क्या चीज़ है तथा इसके लिए किस प्रकार की संवेदना पैदा करने की आवश्यकता है।

तशहूद तअव्वुज और सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुजूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अजीज ने फरमाया-

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला पर्दे में है परन्तु वह अपनी शक्तियों से पहचाना जाता है, दुआ के द्वारा उसकी हस्ती का पता लगता है। फ़रमाया- कोई राजा अथवा बादशाह कहलाए, प्रत्येक व्यक्ति पर ऐसी कठिनाईयाँ आती हैं जिनमें इंसान बिल्कुल असहाय रह जाता है और नहीं जानता कि अब क्या करना चाहिए। उस समय दुआ के द्वारा जटिलताओं का निवारण हो सकता है।

असंख्य स्थानों पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने विभिन्न दृष्टि कोणों से, विभिन्न तरीकों से इसकी महत्ता बयान फरमाई है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा ने इसका ऐसा बोध प्राप्त किया तथा आप अलैहिस्सलाम के संग रहने के कारण उनका दुआओं पर ऐसा विश्वास था और ऐसा ईमान था कि ग़ैरों पर भी इसकी धाक थी तथा अन्य धर्मों वाले भी, जो अहमदियों के सम्पर्क में थे, समझते थे कि इनकी दुआएँ बहुत क़बूल होती हैं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रजी. बयान फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में एक घटना सुनाई गई जिसपर आप बहुत हंसे। हज़रत मुंशी अरोड़े खान साहब की घटना है। हज़रत मुंशी साहब आरम्भ में अत्यधिक क़ादियान आया करते थे। एब बार उन्होंने मजिस्ट्रेट से कहा कि मैं क़ादियान जाना चाहता हूँ, मुझे अवकाश प्रदान कर दें। उसने इंकार कर दिया। मुंशी साहब कहने लगे, ठीक है मैं आज से बददुआ (शाप देने) में लग जाता हूँ। अंततः मजिस्ट्रेट को कोई ऐसी हानि हुई कि वह बहुत डर गया तथा उसके बाद यह प्रभाव हुआ उस मजिस्ट्रेट पर कि जब भी शनिवार का दिन आता था तो वह न्यायालय वालों से कहता कि आज का काम तनिक शीघ्र बन्द कर देना। इस प्रकार वह मजिस्ट्रेट आप ही जब भी मुंशी साहब का क़ादियान आने का निश्चय होता, उन्हें छुट्टी दे देता तो ऐसा भयभीत हुआ उनकी दुआ से। तो ये लोग थे जिन्होंने अपनी बुजुर्गी और दुआओं का अन्य लोगों पर प्रभाव भी डाला हुआ था और यही चीज़ है जिसे हमें आज भी अपने सम्मुख रखना चाहिए तथा अल्लाह तआला से सम्बंध में बढ़ना चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हवाले से कुछ अन्य बातें बयान करता हूँ जो हज़रत मुस्लेह मौऊद ने बयान फरमाई हैं और हमारी रूहानियत में व्यापकता एवं तर्बियत में अति आवश्यक हैं। दुनिया में विभिन्न प्रकृति एवं मानसिकता के मनुष्य होते हैं कुछ लोगों की संवेदन शक्ति तेज़ होती है तथा कुछ लोगों की कम। हज़रत मुस्लेह मौऊद इस अनुभूति के अन्तः की हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हवाले से एक सांसारिक उदाहरण भी देते हैं। आप फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते थे कि किसी नगर में कुछ नागरिक आपस में चर्चा कर रहे थे कि तिल बड़े गर्म होते हैं। यह हो नहीं सकता कि कोई एक पाव तिल खाए और बीमार न हो जाए। इस चर्चा की बीच एक ने कहा कि यदि कोई इतनी मात्रा में तिल खाए तो मैं उसे पाँच रुपए का पुरस्कार दूँगा। कोई ज़मीनदार वहाँ से गुज़र रहा था, उसने आगे आकर पूछा कि टहनियों के साथ खाने हैं कि बिना टहनियों के। अब इन दोनों की अनुभूति में कितना अन्तर है। एक तो वे हैं कि एक पाव तिल खाना असम्भव समझते हैं तथा एक वे हैं जो टहनियों सहित खाने के लिए तय्यार हैं।

अतः दुनिया में जितने अन्तर हैं, ये अनुभूति के अन्तर हैं और यही आध्यात्मिक दुनिया में भी चलता है क़ानून। किसी पर नमाज़ का अधिक प्रभाव होता है, किसी पर कम होता है। कुछ ऐसे हैं जो केवल नमाज़ें पढ़ते हैं अथवा प्रत्यक्षतः नमाज़ें पढ़ रहे होते हैं, टक्करें मारी और चले गए, कोई प्रभाव ही नहीं हो रहा होता नमाज़ का। आध्यात्मिक संवेदना के प्रमाण के लिए उन्हीं का साक्ष्य स्वीकारिय होगा जिनमें यह संवेदना अधिक हो, जिनपर अधिक प्रभाव होता हो, जो इबादत करते हों तथा इबादत का प्रभाव भी उनपर प्रकट हो रहा होता हो।

अतः जमाअत में इस प्रकार के लोगों की संख्या अधिक होनी चाहिए कि जिनमें संवेदन शक्ति ऐसी हो जो आध्यात्मिक प्रभाव को अधिक से अधिक ग्रहण करने वाली हो तथा फिर दुनिया को बताने वाली हो कि वास्तविक नमाज़ क्या चीज़ है, वास्तविक इबादत क्या चीज़ है तथा इसके लिए किस प्रकार की संवेदन शीलता पैदा करने की आवश्यकता है। हज़रत मुस्लेह मौऊद एक वृत्तांत बयान करते हैं जो कि हज़रत खलीफ़ः अब्दुल रज़ी. बयान फ़रमाया करते थे कि एक दिन के विद्वान मौलवी खान मलिक साहब जो व्याकरण के बड़े ज्ञानी थे। वह कहीं से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे के सम्बंध में चर्चा सुनकर क़ादियान आए तथा आपकी बातें सुनकर ईमान ले आए। वापसी पर जब वे लाहौर पहुंचे तो उन्होंने सोचा कि मौलवी गुलाम अहमद साहब से, जो शाही मस्जिद में दर्स देते थे तथा उनके शिष्य रह चुके थे, उनसे मिलते चलें। मौलवी गुलाम अहमद साहब ने मौलवी खान मलिक साहब से पूछा कि फ़रमाईए कहाँ से तशरीफ़ ला रहे हैं? उन्होंने कहा क़ादियान से। उन्होंने चकित होकर पूछा, क़ादियान से? उन्होंने कहा, हाँ क़ादियान से। उन्होंने पूछा क्यों? तो कहने लगे कि मिर्ज़ा साहब का मुरीद होने के लिए गया था। उन्होंने कहा कि आप इतने बड़े विद्वान हैं, आपने उनमें क्या गुण देखा कि उनके मुरीद होने के लिए चले गए। मौलवी खान मलिक साहब ने पंजाबी में उन्हें कहा कि ‘‘तू अपना कम कर, तैज़ू ते क़ाल यकूल वी चंगी तरह नहीं आन्दा’’ तो ऐसे नेक प्रकृति के लोग भी थे जो जाते थे तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में शामिल हो जाते थे। कोई विद्वान होने के कारण अभिमान नहीं था उनको। इसी प्रकार हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. एक घटना बयान फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में एक अरब का निवासी आया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कुछ लोगों को नियुक्त किया कि उसे तबलीग़ करें। कई दिनों तक उसके साथ बात चीत होती रही परन्तु उस पर कोई प्रभाव न हुआ। अंततः तबलीग़ करने वाले दोस्तों ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से निवेदन किया कि यह बड़ा जोशीला है, सवाली लोगों की भांति नहीं है यह। इसे सत्य जिज्ञासा प्रतीत होती है। आपने दुआ की तथा आपको बताया गया कि उसका मार्ग दर्शन किया जाएगा। खुदा की इच्छा कि उसी रात उस पर किसी बात का ऐसा प्रभाव हुआ कि प्रातः उसने बैअत कर ली और फिर चला गया। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि हज़रत के अवसर पर कई क़ाफ़लों को उसने तबलीग़ की। एक क़ाफ़ले वाले उसे मार मार कर बेहोश कर देते थे तो वह होश आने पर उठकर अन्य क़ाफ़ले के पास चला जाता और तबलीग़ करता। तो बात यह है कि अल्लाह तआला जब सीने खोले तो खुलते हैं और फिर ऐसा अद्वितीय जोश पैदा होता है कि किसी चीज़ की चिंता नहीं होती फिर।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बच्चों के साथ किस प्रकार सम्बंध रखते थे तथा किस प्रकार उनकी दीक्षा का भी ध्यान रखते थे, इसके विषय में हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि दीक्षा का उपयुक्त मार्ग वही है जो उसे खेद कूद सिखाए। अर्थात् खेलते कूदते ही तर्बियत हो जाए। पहले तो, जब वह छोटा बच्चा हो, कहानियों के द्वारा उसकी दीक्षा आवश्यक होती है। बड़े आदमी के लिए केवल उपदेश पर्याप्त होता है। परन्तु बचपन में रूचि कायम रखने के लिए कहानियाँ अनिवार्य होती हैं। यह आवश्यक नहीं कि वे कहानियाँ झूठी हों। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमें कहानियाँ सुनाया करते थे, कभी यूसुफ़ की कथा बयान फ़रमाते, कभी नूह की कथा सुनाते और कभी हज़रत मूसा का वृत्तांत बयान फ़रमाते परन्तु हमारे लिए वे कहानियाँ ही होती थीं, यद्यपि वे सत्य कथाएँ थीं। अतः बचपन में तर्बियत का सर्वोत्तम माध्यम कहानियाँ हैं। यद्यपि कुछ कथाएँ अर्थहीन एवं झूठी होती हैं परन्तु उच्च आचरण सिखाने वाली तथा शिक्षाप्रद कहानियाँ भी हैं। और जब बच्चे की आयु बहुत छोटी हो तो इस प्रकार उसे तर्बियत दी जाती है। फिर जब वह थोड़ी प्रगति करे तो उसके लिए शिक्षा दीक्षा की उत्तम चीज़ खेलें हैं। कुछ आ जाते हैं माता-पिता कि यह खेलता बहुत है। यदि टी वी गेमों पर नहीं खेल रहा और बाहर जाकर खेलता है, तो खेलने देना चाहिए बच्चे को। पुस्तकों के द्वारा जिन विद्याओं का ज्ञान दिया जाता है, वह खेलों के द्वारा, क्रियात्मक रूप में बच्चों को वही शिक्षा दी जाती है। परन्तु कहानियों का ज़माना खेल से नीचे का ज़माना है।

अतः बापों में भी बच्चों के लिए समय निकालना चाहिए। यदि माँ-बाप दोनों मिलकर बच्चों की तर्बियत पर ध्यान दें, उनके साथ मैत्री सम्बंध बनाए रखें, उनका उचित मार्ग दर्शन करें, उनको अपने संग जोड़ें तो निःसन्देह तर्बियत की अनेक समस्याओं का निवारण हो जाए, जिसकी माँ-बाप को शिकायत रहती है। आजकल तो माँ-बाप इस बात से बचने के लिए कि

बच्चे शोर न करें तथा अलग बैठे रहें, या उनके हाथों में आई-पैड पकड़ा देते हैं या कम्प्यूटर पर बिठा देते हैं और यदि कोई अच्छी कहानियाँ आ रही हों तो ठीक, नहीं तो कई बार केवल समय नष्ट हो रहा होता है और छोटे बच्चों को तो वैसे भी उस पर नहीं बिठाना चाहिए क्योंकि एक तो दृष्टि पर प्रभाव पड़ता है, यदि लम्बे समय तक बैठे रहें। दूसरे दो साल से कम आयु के बच्चे को तो वैसे भी डाक्टर कहते हैं कि उसके मस्तिष्क पर प्रभाव पड़ता है तथा फिर वह एक ओर लग जाता है। कई बार बुरे प्रभाव पड़ते हैं। तो इस प्रकार हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि जैसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमें कथाएँ सुनाया करते थे, कहानियाँ सुनाने का जो लाभ उस समय होता था, वह भी उनके द्वारा प्राप्त होता था। यदि उस समय आप वे कथाएँ न सुनाते तो फिर हम शोर मचाते और आप काम न कर सकते थे। अतः यह आवश्यक होता था कि हमें कहानियाँ सुनाकर चुप कराया जाता और यही कारण था कि रात के समय हमारी रूचि को बनाए रखने के लिए आप जब भी अव्यस्त हों हमें कहानियाँ सुनाया करते थे ताकि हम सो जाँएँ और आप काम कर सकें। अब कुछ चीज़ें इस प्रकार की आ गई हैं जिसके कारण माँ-बाप एक तो मेहनत नहीं करते तबियत पर, दूसरे उनके सम्बंध कम हो गए हैं बच्चों के साथ। इस ओर ध्यान देना चाहिए।

इस बात पर चर्चा करते हुए कि दोस्तियाँ ऐसी होनी चाहिएँ जो विनाश का कारण न बनें हज़रत मुस्लेह मौऊद ने एक घटना बयान फ़रमाई कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि एक व्यक्ति, यह पुरानी कथा है। एक व्यक्ति की रीछ के साथ मित्रता थी, उसने उसे पाला था अथवा किसी विपत्ति के समय उस पर उपकार किया था इस कारण से वह उसके पास बैठा करता था। यह एक कथा है जो उपदेश हेतु बनाई गई है यद्यपि ऐसा भी हो जाता है कि मनुष्य रीछ इत्यादि पशुओं को पाल कर अपने साथ मिला लेता है। परन्तु जब मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा वर्णित कोई कथा बयान करता हूँ तो उसका यही अर्थ होता है कि यह शिक्षा देने के लिए एक कथा है अर्थात् नसीहत प्राप्त करने के लिए एक कथा है। तो इस प्रकार रीछ एक व्यक्ति का दोस्त था तथा उसके पास आता था। एक दिन उसकी माता जी बीमार पड़ी थी और वह पास बैठा पंखा हिला रहा था और मक्खियाँ उड़ा रहा था। भाग्यवश उसे किसी कार्य से बाहर जाना पड़ा और उसने रीछ को संकेत किया कि तुम तनिक मक्खियाँ उड़ाओ, मैं बाहर जाकर आता हूँ। रीछ ने श्रद्धा पूर्वक यह कार्य आरम्भ तो कर दिया, परन्तु मनुष्य एवं पशु के हाथ में अन्तर होता है और पशु इतनी सरलता पूर्वक हाथ नहीं हिला सकता जितनी सरलता से मनुष्य हिला सकता है। वह मक्खी उड़ाए परन्तु वह फिर आकर बैठ जाए, फिर उड़ाए फिर आ बैठे। उसने सोचा कि मक्खी का बार बार बैठना मेरे दोस्त की माँ के लिए उचित नहीं होगा। अतः उसका निवारण करने के लिए उसने एक बड़ा सा पत्थर उठाया और उसे दे मारा ताकि मक्खी मर जाए। मक्खी तो मर गई परन्तु साथ ही उसकी माँ भी कुचली गई। यह एक उदाहरण है जिसका अर्थ यह है कि कुछ नादान किसी से दोस्ती करते हैं परन्तु दोस्ती करने का ढंग नहीं जानते। वे कई बार शुभ चिन्ता करते हैं परन्तु वास्तव में होता विनाश है।

अतः मित्रताएँ जहाँ एक ओर अल्लाह तआला की निकटता प्रदान करती हैं, दोस्तों को लाभान्वित करती हैं वहीं तबाही व विनाश कई बार दोस्तों का भी करती हैं तथा अपना भी करती हैं। अतः इस संदर्भ में सदैव मित्रता का हक अदा करने के लिए बुद्धि का भी प्रयोग करना चाहिए तथा भावनाओं को भी नियन्त्रित रखना चाहिए। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि मुझे याद है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सुनाया करते थे कि कोई रीछ था उसका एक आदमी के साथ दोस्ताना था। उसकी पत्नि सदैव उसपर आपत्ति करती थी कि तू भी कोई आदमी है तेरी मित्रता रीछ के साथ है। एक दिन उसकी दिल दुखाने वाली बातें इतनी बढ़ गईं तथा ऐसे उच्च स्वर में उसने कहना आरम्भ किया कि रीछ ने भी सुन लिया। रीछ ने तब एक तलवार ली और अपने दोस्त से कहा कि यह तलवार मेरे सिर पर मारो। इस बात के सम्बंध में आश्चर्य नहीं होना चाहिए, यह केवल एक कथा है यह बताने के लिए कि कोई आदमी रीछ की शकल का होता है तथा कोई मानव की शकल का। प्रत्येक की एक प्रकृति होती है, इंसानों में भी कई रीछ होते हैं, कई लोग इंसान कहला कर भी हैवान बने होते हैं। उस व्यक्ति ने बड़ा इंकार किया परन्तु रीछ ने कहा कि अवश्य मेरे सिर पर मारो। अंततः उसने तलवार उठाई तथा रीछ के सिर पर मारी। वह खून में नहा गया तथा जंगल की ओर चला गया। एक वर्ष के बाद फिर अपने दोस्त के पास आया और कहने लगा मेरा सिर देख, कहीं घाव का निशान है? उसने देखा तो कहीं घाव का कोई निशान दिखाई नहीं दिया। तब रीछ ने कहा कि जंगल में कुछ बूटियाँ होती हैं, मैंने उपचार किया और चंगा हो गया परन्तु तेरी पत्नि जो बातें करती थी मेरे विरुद्ध, उसका घाव आज तक हरा है मेरे दिल में। तो कई बार तलवार के घाव से ज़बान का घाव बड़ा गहरा होता है और यह तलवार ऐसा घाव लगाती है जो कभी भूलने में नहीं आता। अतः समाज में अमन के लिए, शांति के लिए इस बात का भी प्रत्येक को ध्यान रखना चाहिए कि एक दूसरे की भावनाओं का भी ध्यान रखें और अकारण ही ऐसी भाषाओं के तीर न चलाएँ जो सदैव हरे रहें, उनके घाव फिर। और यह ऐसा पाठ है जिसे सदैव याद रखना चाहिए प्रत्येक अहमदी को।

हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने के बाद अपने ईमान की सुरक्षा प्रत्येक अहमदी का कर्तव्य है और कई बार छोटी छोटी बातें ही हैं जो ईमान को नष्ट कर देती हैं। कई बार अल्लाह तआला की इच्छा के विरुद्ध बातें की जाएँ तो ईमान नष्ट हो जाता है। अतः हमें सदैव आत्म निरीक्षण करते रहना चाहिए।

ज़िक्र-ए-इलाही (ईश स्तुति) की ओर हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हवाले से ध्यान दिलाते हुए हजरत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम किसी बुजुर्ग का कथन सुनाया करते थे कि दस्त दाकारो दिल बा यार अर्थात् इंसान के हाथ तो कामों में लगे होने चाहिए परन्तु उसका दिल अल्लाह तआला की ओर लगा होना चाहिए। इसी प्रकार एक बुजुर्ग के विषय में विख्यात है कि उनसे किसी ने पूछा कि मैं कितनी बार अल्लाह तआला का जिक्र किया करूँ? उन्होंने कहा महबूब का नाम लेना और फिर गिन गिन कर। तो जिक्र-ए-इलाही वही है जो असंख्य हो परन्तु एक समय सुनिश्चित करने में यह लाभ होता है कि इंसान उस समय अपने प्रिय के लिए अन्य कामों से बिल्कुल अलग हो जाता है और क्योंकि ये दोनों अवस्थाएँ अनिवार्य हैं इस लिए उचित नियम यही है कि निश्चित समय पर भी अल्लाह की स्तुति की जाए और आजकल संसारिकता में पड़े हुए लोग नहीं समझते इस बात को, इस लिए उनको हर हाल में समय निकालना चाहिए तथा अनिश्चित रूप से भी उठते बैठते अल्लाह तआला को याद किया जाए तथा उसकी दया और उपकारों का बार बार जाप किया जाए। दीन की बातों को ध्यान पूर्वक सुनना, उन्हें याद रखने का प्रयास करना तथा फिर उनके अनुसार कर्म करना, यह एक अहमदी का लक्ष्य होना चाहिए। ख़ुबों को सुन लेना, सम्बोधनों को सुन लेना, गोष्ठियों में शामिल हो जाना अथवा आंशिक रूप में किसी पुस्तक को पढ़ लेना तथा उसका आंशिक प्रभाव ग्रहण कर लेना, उसको याद न रखना अथवा कर्म न करना, यह कोई लाभ नहीं देता इंसान को। फिर हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबें हैं, उनका अध्ययन तथा उनसे लाभ प्राप्त करना भी जमाअत के महत्त्व पूर्ण कर्तव्यों में से है परन्तु याद रखो केवल आनन्द प्राप्ति के लिए तुम ऐसा न करो बल्कि लाभ प्राप्त करने तथा कर्म करने की धारणा से तुम इन बातों की ओर ध्यान दो। तुम आनन्द प्राप्ति के लिए पूरा कुरआन पढ़ जाओ तो तुम्हें कुछ लाभ प्राप्त नहीं होगा परन्तु यदि तुम अल्लाह तआला के गुणों पर विचार करते हुए, उसके प्रेम में लीन होकर एक बार भी सुब्हानल्लाह कह लो तो वह तुम्हें कहीं का कहीं पहुंचा देगा। हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक बार मज्लिस में बयान फ़रमाया कि कई बार हम तसबीह करते हैं तो एक तसबीह से हम कहीं के कहीं पहुंच जाते हैं। मैं उस मज्लिस में उपस्थित था। एक नौजवान ने यह बात सुनी तो वहाँ से उठकर मेरे पास आया कहने लगा कि पता नहीं आज हजरत साहब ने यह क्या कहा है। वह साहिबे तजरबा (ईश्वर के स्मरण का अनुभवी) नहीं था परन्तु मैं उस आयु में भी साहिबे तजरबा था। उसे पूरे पूरे दिन सुब्हानल्लाह कह कर कुछ नहीं मिलता था परन्तु मैं अपने व्यक्तिगत अनुभव के कारण जानता था कि कई बार ऐसा हुआ कि जब मैंने सुब्हानल्लाह कहा तो मुझे यह आभास हुआ कि पहले मैं और था तथा अब मैं कुछ और बन गया हूँ। देखो रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी इस विषय को कैसे उत्तम रंग में बयान किया है। यद्यपि मैंने उस समय तक बुखारी शरीफ़ नहीं पढ़ी थी परन्तु मेरा अनुभव सटीक था। रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि दो कलिमे ऐसे हैं कि रहमान को बड़े प्यारे हैं, ज़बान पर बड़े हलके हैं। इंसान इन शब्दों को बड़ी सरलता पूर्वक निकाल सकता है, कोई कठिनाई उसको नहीं होती। परन्तु क्यामत के दिन जब कर्मों के भार का प्रश्न आएगा तो वे बड़े भारी निकलेंगे तथा जिस पलड़े में वे होंगे, उसे बिल्कुल झुका देंगे और वे क्या हैं? कि **سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ** कहते हैं कि मुझे इन कलिमों के पढ़ने की बड़ी आदत थी और मैंने देखा कि कभी कभी एक बार ही इन कलिमों को कहने से मेरी आत्मा उड़कर कहीं से कहीं जा पहुंचती है।

तो मूल बात यही है कि हम गम्भीरता से अल्लाह तआला के आदेशों पर विचार करें तथा उनके अनुरूप कार्य करने का प्रयास करें। अतः यही सत्य है कि कभी कभी मन से तसबीह तथा ईश स्तुति जो होती है तो यूँ लगता है कि अपना प्रभाव दिखा रही है, अनुभूति होती है इसकी। अल्लाह तआला हम सबको इसका सामर्थ्य प्रदान करे जो एक ओर हमारे अन्दर कर्म करने की शक्ति पैदा करे तथा ख़ुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्ति करने वाला बनाए वहीं हम उसकी तसबीह एवं गुणगान करने वाले हों जो हमारी आत्माओं को उच्च स्तर पर ले जाए और हमें ख़ुदा तआला की निकटता प्राप्त हो जाए।